पाठ - 5
एलानिया दावत

الدرس الخامس - هندي
الدعوة الجهرية

अल्लाह क रसूल सल्लल्लाहु अलैहे वसल्लम तीन सालों तक चुपक चुपक म व्याक्तगत तार पर लोगों को दावत देते रहे। इसके बाद अल्लाह ने यह आयत उतारी فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَأَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِينَ

जिस बात का आप को हुक्म दिया जा रहा है उसे खोलकर सुना दिजीए और मुशिरकीन से मुह फेर लिजीए
तो एक दिन रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम सफ़ा की पहाड़ी पर मक्का वालों को आवाज़ लगाने के लिए खड़े हुए आपकी बात सुनकर बहुत सारे लोग जमा हो गए जिनमें आपका चचा अबू लहब भी था जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की दुश्मनी में आगे आगे था। जब आपके पास लोग जमा हो गए तो आपने फ़रमायाः
देखो यदि मैं तुम्हें बताऊं कि इस पहाड़ के पीछे दुशमन घात लगाकर बैठा हुआ है तो क्या तुम मेरी बात की तसदीक़ करोगे?
तमाम लोगों ने कहाः ''हमने आपको हमेशा सच्चा और अमानतदार पाया है। आपने कहाः ''मैं तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब से डरा रहा हूं। इसके बाद रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम उन्हें इस्लाम की दावत, अल्लाह की इबादत और बुतों की पूजा को छोड़ने की दावत देने लगे। लोगों के बीच से अबू लहब बाहर निकला और कहाः ''तुम बर्बाद हो क्या तुमने हमें इसी वजह से जमा किया है? इस अवसर पर अल्लाह ने एक सूरह उतारी जो क़ियामत तक पढ़ी जाती रहेगी

تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ* مَا أَغْنَى عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ* سَيَصْلَى نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ* وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ* فِي جِيدِهَا حَبْلٌ مِنْ مَسَدٍ

अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अपनी दावत को जारी रखा और आपने लोगों के जमा होने की जगहों पर खुलकर दावत देना शुरु कर दिया। आप काबा के क़रीब नमाज़ पढ़ा करते थे। लोगों की मज्लिसों में आते, मुश्रिकों के बाज़ारों में तशरीफ ले जाते, ताकि उन्हें इस्लाम की दावत दे सकें। आप को काफ़िरों की यातनाओं का बहुत ज़्यादा सामना करना पड़ा, इसी तरह से आप पर जो लोग ईमान लाए थे, काफ़िरों की यातनाएं उन पर बढ़ गयीं। इन्हीं में यासिर, सुमय्या और उनके बेटे अम्मार की यातनाएं भी हैं कि यासिर व सुमय्या यातनाओं की कठोरता की वजह से शहीद हो गए। सुमय्या इस्लाम में सबसे पहली शहीद महिला हैं। बिलाल रजियल्लाहु अन्हु अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु की कोशिशों से इस्लाम में दाखिल हुए थे जिसका उमय्या बिन खल्फ़ को पता लगा तो उसने यातनाओं और तकलीफों की सारी हदें तोड़ दीं ताकि वे इस्लाम को छोड़ दें लेकिन उन्होंने इस बात से इन्कार कर दिया और अपने दीन पर क़ायम रहे
अतएव उमय्या बेड़ियों में जकड़ कर आपको मक्का के बाहर ले जाता और आपको गर्म रेत पर लिटा कर आपके सीने पर बड़ा भारी पत्थर रख दिया करता था। इसके बाद स्वयं वह और उसके दूसरे आदमी को कोड़ों से मारा करते थे। इस दौरान बिलाल ''अहद अहद अर्थात अल्लाह एक है, अल्लाह एक है कहा करते थे। एक दिन बिलाल रजियल्लाहु अन्हु इसी हाल में थे कि उनके पास से अबू बक्र रजियल्लाहु अन्हु का गुज़र हुआ तो उन्होंने बिलाल रजियल्लाहु अन्हु को खरीद लिया और उन्हें अल्लाह की राह में आज़ाद कर दिया
नबी करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम इन्हीं मुसीबतों और परेशानियों की वजह से मुसलमानों को इस्लाम खुल कर ज़ाहिर करने से मना किया करते थे और इसी तरह उन्हें खुफ़िया तौर पर जमा किया करते थे, क्योंकि यदि आप उनको एलानिया तौर पर जमा करते तो शिर्क में मस्त लोग रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम और आपकी शिक्षा व रहनुमाई के बीच आड़े आ जाते और इससे दोनों गिरोहों के दरमियान जंग छिड़ जाती जो कि मुसलमानों की कम तादाद व बेसरो सामानी की वजह से मुसलमानों के विनाश और बर्बादी का कारण बन जाती अतएव हिकमत का तक़ाज़ा यही था कि दावत को खुफ़िया रखा जाए। जहां तक रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की बात है तो आप कुरैश के काफ़िरों की यातनाओं और अत्याचारों के बावजूद एलानिया तौर पर दावत और इबादत को मुश्रिकों के सामने अंजाम दिया करते थे।